ॐ

ऊँ विष्णुपाद १०८ त्रिदंडी स्वामी श्री श्रीमद् भक्तिश्रवण तीर्थ गोस्वामी महाराज स्तुति संग्रहः

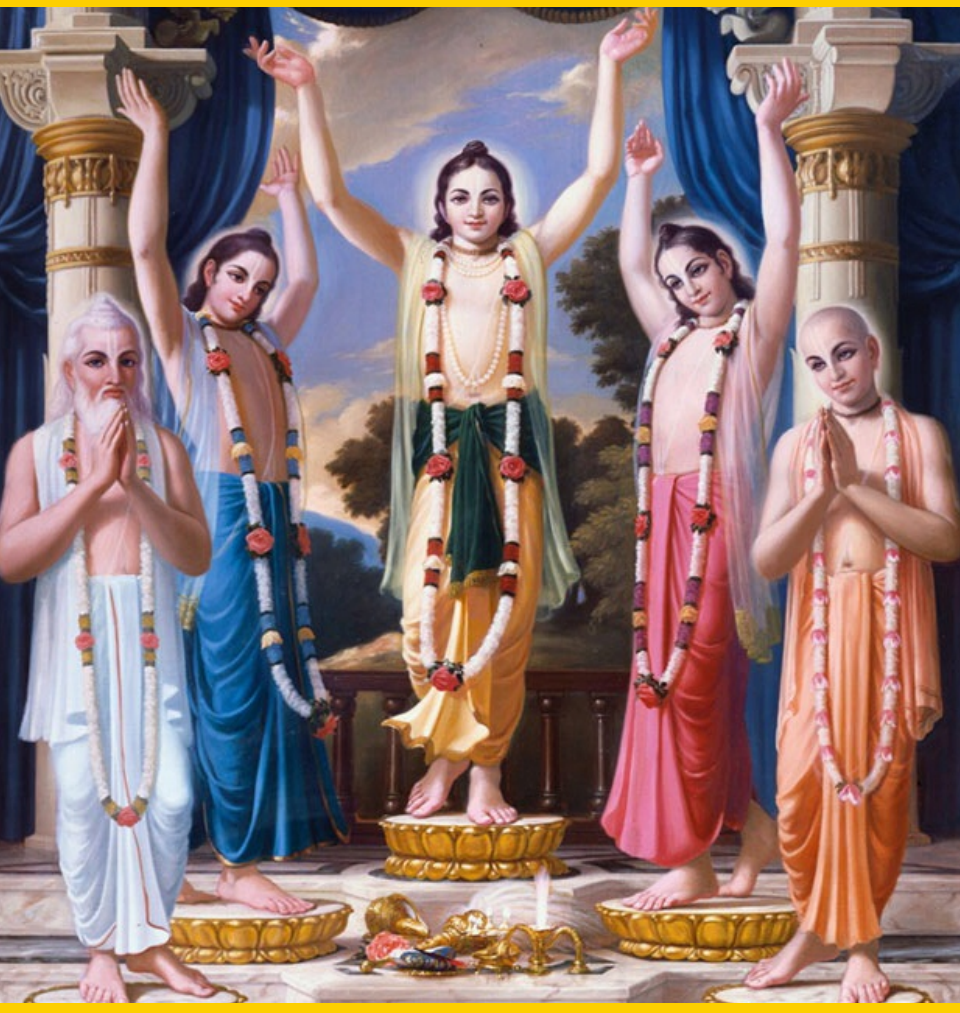

श्रीमद् भक्तिश्रवण तीर्थ गोस्वामी महाराज

स्तुति संग्रहः

२०२२
प्रथम संस्करण
५० प्रतिलिपी

Contents

ध्यान श्लोकं	1
प्रणाम मंत्र	2
प्रणाम मंत्र २	4
श्रीमद भक्तिश्रवण वन्दनस्तोत्रं (सुप्रभातम्)	5
श्रद्धांजलि	8
श्रीमद भक्तिश्रवण महिमा स्तोत्रं	10
गुरु स्तोत्रं	16
श्रीमद भक्तिश्रवण 108 नामावली:	17
श्रीमद भक्तिश्रावण तीर्थ पंचाकम्	23
आरती	26
श्रद्धार्घ्य (बंगला)	28
श्री गुरु चालीसा (बंगला)	29

ध्यान श्लोकं

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः
पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं
मोक्षमूलं गुरोःकृपा॥

प्रणाम मंत्र

नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्ण प्रेषठाय भूतले
श्रीमते भक्तिश्रवण स्वामिन् इति नामिने

नमस्ते महाराजाय भक्तिश्रवण नामिने
कलौ कृष्ण स्वरूपाय दिव्य मूर्तिम् नमाम्यहं ||

आधुनिक युगे विशेषतः स्त्रीनां उद्धारणाय
संवृत गौर्हरी महाप्रेमावताराय
श्रीमद् भक्तिश्रवण स्वामीने नमः ||

Pranam Mantra

We offer our respectful obeisances
unto His Divine Grace Srimad
Bhakti Sravan Tirtha Swami Who is very
dear to Sri Krishna on this earth

We offer our respectful obeisances
unto the Divine Form of Srimad
Bhakti Sravan Maharaj, Who is the
manifestation of Sri Krishna in the age of Kali

Our prostrated obeisances unto
Srimad Bhakti Sravan Swami,
the concealed incarnation of the
Great Divine Prem Avatar Sri Gaur Hari,
Who appeared in the modern age for
the specific deliverance of women

प्रणाम मंत्र

आचार्यबार्यम् नाम प्रेम सिद्धम्
भक्तिश्रवण तीर्थम् प्रणमामि नित्यं ||

I bow down everyday to
Bhakti Sravan Tirtha
The foremost amongst
acharyas Who has
attained perfection in
Love of the Holy Name

श्रीमद् भक्तिश्रवण वंदनास्तोत्रम् (सुप्रभातम्)

मधु वसंत फालगुनी होलिमग्न वृंदावन फ़ाग भूषितम्
गौर पूर्णिमा शुभलग्न जातकम्
महाप्रेमावतारी करुणा पाराबारी भुवन मंगल कारणम्
प्रणमामि गौरहरि श्रवण तीर्थ पदम्।।

उज्ज्वल सजल युगल करुणा निर्झर नयन कमलम्
शांत गभीर चपल सुंदर भ्रमर कृष्णक्षि तारका युगलम्
सुदीप्त नासिका सयत्नेन तिलक रचितम्
उत्फुल्ल मुख कमलसुंदर शोभित फुल्ल रक्ताधरम्
प्रणमामि गौरहरि श्रवण तीर्थ पदम्।।

पूर्वराग रंजित अरुण तरुण प्रभात रवि
नवकिशलय रूप तारुण्यामृत स्नानम्
अस्तमित पश्चिम दिगंत आवीरावृत
गैरिक सुषमा लावण्यामृत स्नानम्
मिलन विरह विधुर मधुर तव स्मरणम्
प्रणमामि गौरहरि श्रवण तीर्थ पदम् ।।

क्षीण कटि तट धृत मोहन गैरिक समादृतम्
मोहन पदविक्षेप तरंग भंग रचितम्
उज्ज्वल अरुण वसन तरुण कांति लावण्य द्यूतिम्
प्रणमामि गौरहरि श्रवण तीर्थ पदम्।।

हास्यरसोज्ज्वल मुखकमल मौन मुखर विषाद मधुरम्
भक्त ह्रदय वृंदावनविहारी लीलनंद्कारी नयनानंद दायकम्,
भक्त ह्रदपद्मस्थित चिन्मय मूर्ति सदा स्फूरितम्
प्रणमामि गौरहरि श्रवण तीर्थ पदम्।।

मुखारविंद मुखरित सदा हरिनाम संकीर्तनम्
भक्त अगणित अलिकूल मुखारविंद परिवृत्य सदा गुंजरितम्
मनोरम भक्त हृदय राज्य राजाधिराजम्
प्रणमामि गौरहरि श्रवण तीर्थ पदम् ।।

मुखपद्म निःसृत भागवतामृत वीणाविनिंदित सुधाधारम्
तृषित भक्त चातक चित्त सुखेन करोति पानम्
शरणागत रक्षक आश्रित पालक आश्रित वत्सलम्
प्रणमामि गौर्हरि श्रवण तीर्थ पदम् ।।

नित्य सत्य शुद्ध बुद्ध निर्विकार निरंजनम्
योगमाया समाश्रित चिद्धन तनु प्रकाशितम्
योगमाया समावृत निज जन परिवृत महामहिमा उद्भासितम्
प्रणमामि गौर्हरि श्रवण तीर्थ पदम्।।

रासकेली वर्णनाधिकारी रासहोली नायकम्
रासलीला टीकाकार रास रस अधीश्वरम्
धीर ललित आप्ततृप्त आप्तकाम आत्माराम रामम्
भैरव बाबाजी स्नेहासिक्त बाल गोपालम्
प्रणमामि गौर्हरि श्रवण तीर्थ पदम्।।

कामना आरती मोहन मनोहर मूर्ति स्निग्ध नयनानंद दायकम्
हे करुणा निधान प्राणपुष्पांजलि ग्रह्यताम्
हे चिर सुंदर चिर किशोर चिर नवीनम्
प्रणमामि गौर्हरि श्रवण तीर्थ पदम्।।

पतीनां पति मीरायाः पति हास्याः गति सर्वकारण कारणम्
सज्जन रंजन हास्याः जीवन व्रजजीवन व्रजनाथम्
अशोक अभय अमृताधार युगल चरणपद्म दीन भक्त सम्पदम्
प्रणमामि गौर्हरि श्रवण तीर्थ पदम्।।

इति गौरदासी विरचितं श्री श्रीमद् भक्तिश्रवण
तीर्थ महाराज: वन्दनास्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

श्रद्धांजलि

गौराकृतिं नमाम्यद्य भूतले देवरूपिणम्।
आनन्द नन्दनवने माधूर्य मूर्त्त विग्रहम्॥

ध्येयं सदा स्वचेतसा वैष्णवं परमं परम्।
स्मरामि भक्तिश्रवणम् राधिकाविष्ट चेतसम्॥

ललाटे तिलकं यस्य कन्ठे तुलसी मालिका।
नमामी गैरिकै: दीप्तम् विश्वकल्याण कारकम्॥

नम: साधु वरेण्याय नमस्ते शान्तमूर्त्तये।
नमस्तुभ्यं महाभाग! नमस्ते कृष्णरूपिणे॥

नमस्तूभ्यं सदानन्द! नमस्ते ज्ञानरूपिणे।
नमो नमो महाप्राज्ञ! भक्तिश्रवण माधवे॥

कृतमिदं मयासाधो मुक्तिपदेन शर्म्मणा।
जयतु भक्तिश्रवण! तव गुणानुरागिणा॥

निवेदनमिति चरणान्तेवासी
मूक्तिपद देवशर्म्मा

Shrimad Bhakti Sravan Shraddhanjali

I offer my prostrations first of all to the Divine effulgent form Whose charming image dwells in the pleasure garden of Nanda

Meditating always in my mind on that top-most supreme Vaishnava I remember Srimad Bhakti Sravan Whose consciousness is engrossed in remembrance of Radhika

With a brilliant tilak adorning His forehead and a string of tulasi beads around His neck, I salute His bright golden form which bestows auspiciousness on the whole world

Prostations unto the Foremost among sadhus, salutations unto His Serene Form; Obeisance unto You O Glorious One who is the embodiment of Krishna

Prostrations unto You who grants perpetual bliss; Obeisance unto the embodiment of all knowledge; Prostrations again and again unto the Great and Wise Bhakti Sravan who represents Krishna

Writing this I Muktipad Sharmanah hail the glories of Srimad Bhakti Sravan and delight in His excellent qualities

Praying thus Muktipad Devsharma rests at His Feet.

श्रीमद् भक्तिश्रवण महिमा स्तोत्रम्

सौम्यरूपम् उज्ज्वल स्वरणाकृतम् आपदबान्धव:
दारिद्र्यहरणम् अबलाय: अभयप्रदम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

मायातीतम् त्रिकालदर्शनम् सर्वमअंतर्यामिनम्
राधाकृष्ण प्रेम भक्ति प्रदम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

सत्यवक्ता निष्ठापरायणम् सन्यासशिरोमणि:
गौरकृष्णस्वरूपम् त्वम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

भक्तवत्सल नृसिंहस्वरुपम् प्रणत पालय
भक्तिवर्धनं भक्ततत्परं
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

अनेकभूतगण तारणम् अहैतुककरुणाकरम्
पतितपावनंदेवम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

भागवतामृत कृतम् वेद तथ्य उद्भासितम्
जन्मांतरित संशयनाशनम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

बहुशालिग्रामग्राही तुलसीपत्र प्रसादेन् भेषजम्
स्वयं व्याधिहारिणाम् भक्तानाम् आयुर्रारोग्य प्रदम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

सर्वे प्रतिग्रहणम् आश्रित भक्त वांछा पूर्णम्
सर्वानुग्रह कारणम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

भावात्मक कथामृत निसृतम् सदा हरिनामसंकीर्तम्
विष्णुरंशावतारम् त्वम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

दिव्यगंधमयम् हस्तकमलकोमलम् चरणार्विंदसुंदरम्
मुखारविंदमधुरम् भक्तमानसमोदनम्
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणीय नमः।।

स्मरणम् मधुरम् विषयम् मधुरम् मंदस्मित मधुरम्
चतुर लीला मधुरा
अपारकरुणासिंधु: भक्तिश्रवणाय नमः।।

पुनःपुनर्नमस्तेस्तु साष्टांगम्यूथम् पुनः
पुनःपुनर्नमस्तेस्तु साष्टांगम्यूथम् पुनः

इति श्रीमद् भक्ति श्रवण महिमा स्तोत्रम् सम्पूर्णं।।
श्री सद्गुरुचरणं समर्पयामी।।
-इति-

श्रीमद् भक्तिश्रवण गायत्री

ॐ भक्तिश्रवणाय विद्महे
श्री कृष्णाय धीमही
तन्नो भक्ति: प्रचोदयात्

Srimad Bhakti Sravan Mahima Stotram

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the
Infinite Ocean of Mercy who is of gentle
appearance with an effulgent golden
complexion, the Friend of the distressed
Who banishes misfortune and
grants women freedom from fear

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the
Infinite Ocean of Mercy Who is beyond the
pale of Maya, the Seer of the three phases
of Time, the in-dwelling Self Who bestows
devotion unto Shri Radha Krishna

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the
Infinite Ocean of Mercy Whose words are
Truth, who is resolutely dedicated (to His vow),
the crown jewel among sanyasis and
the embodiment of Gaur-Krishna

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the
Infinite Ocean of Mercy Who is the
manifestation of Sri Nrisinghdev having
maternal love for His devotees, Who nurtures
His surrendered disciples, increasing their
Bhakti and is ever ready for
(the succour of) His devotees

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the Infinite Ocean of Mercy the Deliverer of many ghostly beings, Who is causelessly merciful and is the Redeemer of fallen souls

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the Infinite Ocean of Mercy Who has extracted the nectar of the Bhagavatam and revealed the Truth of the Vedas and Who resolves the doubts of many lifetimes

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the Infinite Ocean of Mercy Who has many shaligram shilas, Who heals devotees with sacred Tulasi leaves, taking on Himself their ailments while bestowing healing and longevity unto them

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the Infinite Ocean of Mercy Who accepts all who approach Him, Who fulfills the wishes of His surrendered devotees and Who confers His full grace on them

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the infinite Ocean of Mercy Whose nectarine discourses melt the heart, Who always rejoices in the Holy Name and Who is a Ray of Vishnu

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan the Infinite Ocean of Mercy Who emanates a divine transcendental fragrance, Whose lotus-hands are soft, Whose lotus feet are beautiful and Whose charming lotus face delights the minds of devotees

Obeisance unto Srimad Bhakti Sravan Whose remembrance is sweet, to speak about Whom is sweet, Whose gentle smile is sweet and Whose charming Leela is sweet

Again and again I offer my prostrated salutations unto You, My prostrated salutations unto You I offer again and again

Here ends Srimad Bhakti Sravan Mahima stotram

Offered unto the Lotus Feet of Shri Gurudev

गुरु स्तोत्रम्

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

श्रीमद् भक्तिश्रवण तीर्थ गोस्वामी महाराज 108 नामावली:

१. ॐ सद्गुरवे नमः ।
२. ॐ साक्षाद्ब्रह्मरूपाय नमः ।
३. ॐ ब्रह्मतत्त्वप्रकाशकाय नमः।
४. ॐ अतींद्रियाय नमः।
५. ॐ अप्रमेयात्मने नमः।
६. ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः।
७. ॐ अदृश्याय नमः।
८. ॐ अरविंदाक्षाय नमः।
९. ॐ अधोक्षजाय नमः।
१०. ॐ अमितविक्रमाय नमः।
११. ॐ अमृतवपुषे नमः।
१२. ॐ अपराजिताय नमः।
१३. ॐ अनन्तरूपाय नमः।
१४. ॐ आत्मयोनये नमः।
१५. ॐ आदिदेवाय नमः।
१६. ॐ आनन्दाय नमः।

१७. ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः।
१८. ॐ गभीरात्मने नमः।
१९. ॐ गोविदांपतये नमः।
२०. ॐ चतुर्व्यूहाय नमः।
२१. ॐ चतुर्वेदविदे नमः।
२२. ॐ जगदादिजाय नमः।
२३. ॐ जीवनाय नमः।
२४. ॐ तत्त्वविदे नमः।
२५. ॐ त्यागसंयास्यात्मस्वरूपधृते नमः।
२६. ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
२७. ॐ त्रिलोकात्मने नमः।
२८. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः।
२९. ॐ दामोदराय नमः।
३०. ॐ दुराधर्षाय नमः।
३१. ॐ द्युतिधराय नमः।
३२. ॐ धर्मकृते नमः।
३३. ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः।
३४. ॐ निवृत्तात्मने नमः।
३५. ॐ नैककर्मकृते नमः।

३६. ॐ परमाप्ताय नमः।
३७. ॐ पञ्चकृत्यपरायणाय नमः।
३८. ॐ पावनाय नमः।
३९. ॐ पुण्यलभ्याय नमः।
४०. ॐ पुरूषोत्तमाय नम
४१. ॐ पुराणाय नमः।
४२. ॐ पुराणागमसारात्मने नमः।
४३. ॐ पुण्यकीर्तये नमः।
४४. ॐ पुरूसत्तमाय नमः।
४५. ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमन।
४६. ॐ विश्वंभराय नमः।
४७. ॐ पुष्कराक्षाय नमः।
४८. ॐ प्रणवरूपाय नमः।
४९. ॐ प्राणजीवनाय नमः।
५०. ॐ प्रधानपुरुश्रेष्वराय नमः।
५१. ॐ प्रजाभवाय नमः।
५२. ॐ विश्वकर्मणे नमः।
५३. ॐ विश्वरूपाय नमः।
५४. ॐ वेदविदे नमः।

५५. ॐ प्रजापतये नमः।
५६. ॐ प्रसन्नात्मने नमः।
५७. ॐ प्रकाशात्मने नमः।
५८. ॐ प्रणवार्थप्रकाशकाय नमः।
५९. ॐ ब्रह्मविदे नमः।
६०. ॐ बृहद्भानवे नमः।
६१. ॐ ब्रह्मण्याय नमः।
६२. ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः।
६३. ॐ भ्राजिष्णवे नमः।
६४. ॐ भास्करद्युतये नमः।
६५. ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
६६. ॐ मधुसूदनाय नमः।
६७. ॐ महाबुद्धये नमः।
६८. ॐ महाशक्तये नमः।
६९. ॐ मुकुन्दाय नमः।
७०. ॐ महाक्रतवे नमः।
७१. ॐ मनोजवाय नमः।
७२. ॐ लोकनाथाय नमः।
७३. ॐ लोकस्वामिने नमः।

७४. ॐ वेदपारायणप्रीताय नमः।
७५. ॐ वेदांतैकार्थरुपवते नमः।
७६. ॐ विश्वमुर्त्तये नमः।
७७. ॐ विशुद्धात्मने नमः।
७८. ॐ विजितात्मने नमः।
७९. ॐ श्रीविभावनाय नमः।
८०. ॐ विश्वबाहवे नमः।
८१. ॐ व्यक्तरूपाय नमः।
८२. ॐ विश्वात्मने नमः।
८३. ॐ विक्रमिणे नमः।
८४. ॐ विश्वकर्मणे नमः।
८५. ॐ विश्वक्सेनाय नमः।
८६. ॐ शब्दातिगाय नमः।
८७. ॐ शुभांगाय नमः।
८८. ॐ श्रीनिवासाय नमः।
८९. ॐ शान्तिदाय नमः।
९०. ॐ शतानन्दाय नमः।
९१. ॐ सर्वेश्वराय नमः।
९२. ॐ सर्वदर्शनाय नमः।

९३. ॐ सदायोगिने नमः।
९४. ॐ सत्यपराक्रमाय नमः।
९५. ॐ सत्कृताय नमः।
९६. ॐ सिद्धसंकल्पाय नमः।
९७. ॐ सुहृदे नमः।
९८. ॐ सत्यधर्मणे नमः।
९९. ॐ संकर्षणाच्युताय नमः।
१००. ॐ स्वस्तिभुजे नमः।
१०१. ॐ संन्यासकृते नमः।
१०२. ॐ सत्यापरायणाय नमः।
१०३. ॐ सर्वासुनिलयाय नमः।
१०४. ॐ सत्यमेधसे नमः।
१०५. ॐ सर्ववागीश्वरेशवराय नमः।
१०६. ॐ सर्वकामदाय नमः।
१०७. ॐ सर्ववैदिकसम्पूज्याय नमः।
१०८. ॐ हिरण्यगर्भायनमः।

ॐ राधाकृष्ण युगल स्वरूपाय नमः।
ॐ श्री श्रीमद् भक्तिश्रवणस्वामिने नमः।

श्री श्रीमद् भक्तिश्रवण तीर्थ पंचकम

सदा सूप्रसन्नं कृपा पूर्ण नेत्रं
कषायाक्त वस्त्रं निरालंबरीशम् |
स्वशिष्यादिभिर्पूजितं देवरूपं
श्रवणभक्तितीर्थं मदाचार्यमीडे ||

ब्रह्मणि यस्य नीष्ठा अखंडा प्रचंडा गरिष्ठं
गुरूणां वरिष्ठां यतीनां
चिन्मयं सर्वरूपं साक्षीचैतन्यरूपं
श्रवणभक्तितीर्थं मदाचार्यमीड़े ||

जनानबोधयंतं स्वतोधर्मनिष्ठं
स्वयं ग्रंथकारं सदासत्यमूर्तिम् |
जगत्पालकं ज्ञानभक्तिं दधानं
श्रवणभक्तितीर्थं मदाचार्यमीडे ||

शरण्यं सदासर्वभक्त्यैकनाथं
सच्चिदानंदरूपं वरेण्यं योगीन्द्रम् |
निष्णातशास्त्रं सर्वधीसाक्षीभूतं
श्रवणभक्तितीर्थं मदाचार्यमीडे ||

परंदैवतं विष्णुरंशावतारं
सदाशास्त्रचर्चारमण शोभयंतम् |
सदासंचरंतं नमत्तापहारं
श्रवणभक्तितीर्थं मदाचार्यमीडे ||

श्लोकं पंचकमिदं प्रोक्तं भक्तेन गुरुतोषये
भक्त्या प्रीत्या पठ्ठेद्यास्तु साप्नोति गुरु सन्निधि: ||

Srimad Bhakti Sravan Tirtha Panchakam

Of pleasant appearance with eyes brimming with mercy, dressed in radiant ochre-coloured raiment; Who is Self-sustained and independent, Whose divine form is worshipped by His disciples and devotees that Sravan Bhakti Tirtha is my Teacher

Firmly dedicated to Brahm with unbroken resolute energy; Who is most venerable among Gurus and top-most among sanyasis; Who is pure Consciousness and the Internal Witness in all beings that Sravan Bhakti Tirtha is my Teacher

Knowing the hearts of men; self-dedicated to dharma Who scripts His own scripture and is ever truthful; Who nurtures the world and bestows knowledge and devotion that Sravan Bhakti Tirtha is my Teacher

Always bestowing His shelter; the Lord of devotees He is Sat Chit Anand Absolute Consciousness-Knowledge-Bliss the Best of Sages deeply learned in scriptures and the universal Witness that Sravan Bhakti Tirtha is my Teacher

Part-incarnation of the Supreme Lord Vishnu He is adorned by joyfully discussing the scriptures and is ever perambulating to remove the distress of devotees that Sravan Bhakti Tirtha is my Teacher

आरती श्री श्रीमद् भक्तिश्रवण तीर्थ महाराज

जयतु भक्तिश्रवण तीर्थ
जयतु सौम्यदर्शन।
जयतु शांत ज्ञानानन्द
जयतु गौर विग्रह ।।

जयतु सच्चिदानन्द
जयतु भक्त-वत्सल।
जयतु सत्यपरायण
जयतु धन्य यतीन्द्र।।

जयतु सतत: परहित व्रत
जयतु लोक कल्याण।
जयतु मूर्त भूमानन्द
जयतु भक्ततारण।।

जयतु शिला-लीलाचारि
जयतु विष्णु पूजक।
जयतु शालग्रामग्राही
जयतु पुण्यवैष्णव।।

जयतु शुद्ध भक्ति मार्गी
जयतु द्वैताद्वैत वादिन हे।
जयतु भक्तिश्रवण तीर्थ
श्री राधाभावमाश्रित।।

जयतु गौरांगचंद्र रूप
जयतु भुवन मंगल।
जयतु भक्तिश्रवण तीर्थ
श्री गुरु चरण शरण हे
श्री गुरु चरण शरण हे
श्री गुरु चरण शरण हे।।

महाचार्य Dr. मुक्तिपद चक्रवर्ती
दिल्ली

ওঁ ১০৮ ত্রিদণ্ডী স্বামী শ্রীমৎ ভক্তি শ্রবণ
তীর্থগোস্বামী মহারাজের প্রতি

শ্রীগুরু শ্রদ্ধার্ঘ্য

দিব্যজ্যোতি মূর্ত যেন নর দেহে আজ।
পরম চৈতন্যরূপী গুরু মহারাজ॥
গৌরাঙ্গ সৌম্য কান্তি শ্রীমুখেতে 'নাম'।
নাম নামী একাকার পূর্ণমনস্কাম॥
প্রশস্ত ললাটে শোভা তিলক সুন্দর।
কণ্ঠে তুলসী মালা শ্রীকৃষ্ণ অন্তর॥
শ্রী রাধার ভাবদ্যুতি বহিরঙ্গে ধরি।
ভক্তের তীর্থরূপী যেন গৌর শ্রীহরি॥
ভক্ত হৃদে ভক্তি দানি ভক্তে কৃপা করি।
দানহ নামের সুধা গুরুরূপী হরি॥
হরি গুরু, গুরু হরি, নাম গুরু হরি।
রাধা কৃষ্ণ, কৃষ্ণ রাধা একাকার করি॥
তারণ করেছ ভক্তে তুমি মহাত্মন।
প্রণতি জানায় পদে দীন অভাজন॥

প্রণত :—ডঃ মুক্তিপদ চক্রবর্ত্তী
চিত্তরঞ্জন পার্ক কালী মন্দির সোসাইটি
নিউ দিল্লী—১৯

শ্রীগুরু চলিশা (পদাবলী)

শ্রীগুরু দক্ষিণা

কৃষ্ণ রায়

গুরু পূর্ণিমা ১৯৯৯

অ—অয়ি ভুবন মোহন গুরু ভক্তি শ্রবণতীর্থ গোস্বামী রতন
আ—আমি হৃদয় মন্দিরে করেছি স্থাপন
ই—ইচ্ছাময়, তোমার মহিমা গুণ করি কীর্তন
ঈ—ঈশ্বরত্ব ঝুলি কাঁধে বিকাই সদা সৎ আচরণ
উ—উচ্চয় সামগ্রী সবই তোমারি নিমিত্ত ভক্তগণ
ঊ—ঊষসী সঙ্গীতে পায় বরাভয় যত অভাজন
ঋ—ঋক্ষ মণ্ডলে তুমিই মুণি মনোহর গৌরাঙ্গধন
এ—এ অধমের ক্ষমা করে রুধিও ভ্রান্ত পথ চলন
ঐ—ঐশ্বর্য মাধুরী অনুক্ষণ মনে করি জীবন যাপনে
ও—ও ধ্রুব পদে স্মরণ নেব যতদিন আছি ভুবনে
ঔ—ঔষ্ণ ওঁকারে গুরু হরি হরি গুরু
ভক্তি পদ শ্রবণ তীর্থঙ্করে করি জগৎ গুরু
অংশুমালা ভূষণে হাসি খেলা শুরু

ক—কৃষ্ণ পরম্পরার তুমি অবতার
খ—খোল, করতাল, মৃদঙ্গ খেলনা তোমার
গ—গীত, কীর্তন, ভজন সঙ্গী সর্বক্ষণ
ঘ—ঘোর অমানিশায় গুরুই দিক নির্ণয়ন
ঙ—উচুঁ নীচ জাতি ভেদ নাই তোমা কাছে
চ—চেতনা বিলাও ব্যাথাতুরা লয়ে বক্ষ মাঝে
ছ—ছলনা জানোনা প্রভু শিশু সম হৃদয়
জ—জগৎ উদ্ধারিতে জ্যোতিস্বরূপ উদয়
ঝ—ঝলমল তব মুখমণ্ডল ভক্ত সমাবেশে
ঞ—এমন প্রসন্ন বিভা দেখি নাই কাশ্যপী আকাশে
ট—টলমল করে নয়ন-প্রবচন ভাবা কালে
ঠ—ঠাকুর স্বয়ং চন্দ্রপ্রভ তুমি সৃষ্টি দলে
ড—ডঙ্কায় ব্রজবুলি তুমিই মদনমোহন, বৃন্দাবন ধাম
ঢ—ঢোল বাজে, সারেঙ্গি বাজে বলে জপ রাধাকৃষ্ণ নাম
ন—না জানি সাধন ভজন গুরু চরণ সার
ত—তীর্থ সব তোমা চরণে, করুণা তব অপার

থ—স্থির অবিচল, মধুর বচন ভক্ত চিন্তামণি
দ—দীন হীন তুমি না হেরিলে পলকে প্রমাদ গণি
ধ—ধরিত্রির স্বয়ং ভগবান কৃষ্ণ, গৌবিন্দ, চৈতন্য
ন—নদিয়া নিমাই তুমি মোর প্রাণধন
প—প্রেম সকাশে ব্রজবাসে ধরো গোপ মুর্তি
ফ—ফুলেশ্বরী রাই সাথে রাস লীলা তব কীর্তি
ব—বলিরে ছলিতে প্রভু তুমি হইলা বামন
ভ—ভাবিয়া স্বরূপ, ব্রহ্মা, মহেশ্বর করে অন্বেষণ
ম—মন ভাণ্ডারে তব কৃষ্ণাঙ্গ মাধুর্য সিন্ধু
য—যশোমতি নন্দন তুমি ভালে বিরাজ ইন্দু
র—রাখো হে হরি সন্তানেরে তব লীলা লাবণ্যে
ল—লজ্জা, ভয়, সংশয় সব দূরে রয় তব মধুর প্রেম আহ্বান
ব—বিশ্বপিতা তুমি দুষ্কৃতি বিনাশন যোগ্য সৃষ্টি অপার
শ—শচী নন্দন কৃপা করি তরাও ত্রিভুবন সংসার
ষ—ষড়ভূজ রূপে পাইল অদ্বৈত, প্রতাপরুদ্র শ্রীবাস রামানন্দ
স—সবাকার নয়নমণি তুমিই প্রভু সদানন্দ
হ—হরি গৌর-গৌর তীর্থ সবে মিলে একাকার
ক্ষ—ক্ষয়িষ্ণু ধরার গুরু কাণ্ডারী তুমি সর্ব জনতার

এ পদাবলী প্রতিদিন করিনু কীর্তন
গুরু পূর্ণিমায় মম মন বাঞ্ছা নিবেদন
কৃপা করি কৃষ্ণ অভাজন—
শ্রীরাঙ্গা চরণে রাখি, কৃষ্ণ গোবিন্দরূপে দাও দরশন

Website
www.srigaurangashram.in
www.scivc.org

Youtube
Sri Srimat Bhakti Sravan Maharaj

Facebook
Sravan Maharaj